जनवरी 2020

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 33 षष्ठम् अंक

इस अंक में...

5 जैन धर्म में अहिंसा विश्व शान्ति का आधार

विशेष स्तम्भ

7 समसामयिक सामान्य ज्ञान

12 आर्थिक परिदृश्य

17 राष्ट्रीय परिदृश्य

22 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

29 क्रीड़ा जगत्

32 उत्तराखण्ड सरकार की नवीनतम योजनाएँ

33 जम्मू-कश्मीर और लद्दाख संघ राज्य क्षेत्रों सहित भारत का नया मानचित्र

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

37 युवा प्रतिभा

38 विज्ञान समाचार

40 सारभूत तत्व कोष

43 समसामयिकी वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

46 संवैधानिक लेख—समान नागरिक संहिता : संविधान की मूल भावना

48 समसामयिक लेख—आरसीईपी समझौता : तथ्य-परक विश्लेषण

50 प्रौद्योगिकी लेख—ग्रामीण विकास में विज्ञान का उपयोग

53 पर्यावरणीय लेख—इको-फ्रैंडली होती मूर्ति विसर्जन परम्परा

55 रसायनशास्त्र के नोबेल पुरस्कार, 2019 पर विशेष—रिचार्ज होने वाली दुनिया के लिए नोबेल

56 कृषि लेख—कृषि विकास हेतु उपयोगी कदम

हल प्रश्न-पत्र

58 एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर ग्रेड 'सी' एवं 'डी' परीक्षा, 2018

73 हरियाणा एस.एस.सी. क्लर्क परीक्षा, 2019

78 राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड, जयपुर सहायक सूचना सीधी भर्ती परीक्षा, 2018

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ऑफिस असिस्टेन्ट (प्रा.) परीक्षा, 2019

86 तर्कशक्ति

89 संख्यात्मक अभियोग्यता

93 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2019 (पेपर II : कक्षा VI से VIII के लिए)

106 सीएपीएफ, एनआईए, एसएसएफ कॉंस्टेबिल और असम राइफल में राइफल्समैन (जीडी) भर्ती परीक्षा, 2018

114 आगामी बिहार सिपाही भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

121 वार्षिक रिपोर्ट 2018-19—खाद्य प्रसंस्करण उद्योग क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में

124 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शब्दावली

126 परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारियाँ

128 क्या आप परिचित हैं ?

129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **–सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

जैन धर्म में अहिंसा विश्व शान्ति का आधार

✍ साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

अगर प्रत्येक व्यक्ति खुद को सद्‌भावित, क्षमाप्लावित, प्रेम पूरित व योग्य बना सकेगा, अहिंसा तो प्राणों का प्राण बनकर सबको सुखमय बना ही देगी.

समण भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर हुए उससे पूर्व सदियों से इस सम्पूर्ण आर्यावर्त में समण संस्कृति जन मानस को शान्ति-सद्‌भाव-समत्व का सन्देश देती रही है. हर ज्ञानी, महात्मा ने आत्म शान्ति को पाने का मार्ग बताया. वह मार्ग है–

– **अहिंसा**

जीवन को उसकी पूर्णता में जानने व जीने वाले इस तथ्य को प्रगट करते हैं कि–

सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया, दुक्ख-पडिकूला, अप्पिय वहा, पियं जीविणो, जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं ॥''

To all living being, life is dear, pleasure favourable, Pain detestable, Slaughter is painful, while life is pleasant, All desire to live, as life is dear to all.

सभी प्राणी जीना चाहते हैं, सभी को सुख प्रिय है, दुःख प्रतिकूल है, वध अप्रिय है, जीवन प्रिय है, चूँकि जीवन सभी को प्रिय है, इसलिए किसी भी प्राणी को कष्ट मत दो. यही ध्रुव धर्म है, नित्य व शाश्वत धर्म है.

अहिंसा ही आत्मा है–ऐसा कथन समण महावीर का रहा. उन्होंने कहा कि–

'अहिंसा समयं चेव, एतावंत वियाणिया.' अहिंसा ही आत्मा है मात्र इतना जान लो तो आप आप्त हुए, विज्ञानी हुए.

किन्तु हम इस 'अहिंसा' को, जोकि शाश्वत धर्म है, समग्र विश्व की शान्ति का आधार है, भला क्यों नहीं अपनाते ? आइए जानें कुछ कारणों को और उन्हें निराकरित करने के उपायों को भी–हिंसा के कारणों में संग्रह का लालच बहुत बड़ा कारण है. अक्सर लोग लालचवश हिंसा करते हैं, क्योंकि वे असुरक्षा के भय से पीड़ित रहते हैं. उन्हें कल की चिन्ता बनी रहती है. अपने कल की चिन्ता में वे कईयों काम आज बिगाड़ देते हैं. पेट व पेटी भरने के चक्कर में औरों के पेट पर लातें मारते रहते हैं. हिंसा का मूल कारण अज्ञान व लालच, इसके दुष्प्रभाव हम विविध देशों की राजनीति में देख सकते हैं. आर्थिक व तकनीकी रूप से सम्पन्न देश अपने से सबको सहायता करने की बजाय कमजोर देशों को अपना उपनिवेश बनाना चाहते हैं अथवा उनसे अपने हित साधने के लिए तत्पर रहते हैं तथा कुछ भी रणनीति अपना कर उन्हें डराने-धमकाने में लगे रहते हैं. ऐसे में वैश्विक स्तर पर छाए संकट के बादल कितनों को आशंकित बनाए रखते हैं. कुछ लोग डरा कर हिंसा करते हैं, तो कुछ लोग डर कर. यह डर कि नहीं ये मेरा नुकसान न कर दे, लोग पहले ही उसे दण्डित करने की योजनाएं बना लेते हैं. इस प्रकार संग्रह का लालच व उसका ही दूसरा पहलू भय आदमी को हिंसक बना देता है. हिंसक वातावरण को हिंसा से, चाहे वह प्रतिकारात्मक ही क्यों न हो, सुधारा नहीं जा सकता. उसके लिए तो पारस्परिक सद्‌भाव व सही समझ ही कारगर सिद्ध हो सकती है.